|  |
| --- |
| 19. Mai 2024 |
| **Pfingstsonntag B** |
| **Am Vorabend:** |
| Erste Lesung: Gen 11,1-9 oder Ex 19,3-8a.16-20a oder Ez 37,1-14 oder Joel 3,1-5 |
| Zweite Lesung: Röm 8,22-27; Evangelium: Joh 7,37-39 |
| **Am Tag:** |
| Erste Lesung: Apg 2,1-11; Zweite Lesung: 1 Kor 12,3b-7.12-13 oder Gal 5,16-25;  |
| Evangelium: Joh 20,19-23 oder Joh 15,26-27; 16,12-15 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 347, 1+2+4 | Der Geist des Herrn |
| Kyrie: | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
| Gloria: | GL 768 | Lobsinget, Christen, dankt |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 104, 1-2.24-25.29-31 u. 34 |
|  | Kehrvers: GL 645, 3 | Sende aus deinen Geist |
|  | Oder |  |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns |
|  | GL 477, 3 | Neu schafft des Geistes Wehen |
|  | GL 411, 1+2+4 | Erde singe |
|  |  |  |
| Sequenz (am Tag): | GL 343/344 | Veni Sancte Spiritus / Komm  |
|  |  | herab, o Heilger Geist |
|  | Oder |  |
|  | GL 349, 1-5 | Komm, o Tröster |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Komm, Heiliger Geist,* |  |
|  | *erfülle die Herzen deiner Gläubigen,* |
|  | *und entzünde in ihnen das Feuer deiner Liebe!* |
|  |  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  | GL 355, 1-5 | Wir glauben Gott  |
|  | GL 491, 1-3 | Ich bin getauft |
|  | GL 801, 5+2 | Fest soll mein Taufbund |
|  | GL 329, 3+4 | Wir sind getauft |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 765, 1+2 | Heilger Geist, du Geist  |
|  | GL 351, 1-6 | Komm, Schöpfer Geist |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 207 | Lamm Gottes |
| Danksagung: | GL 342, 1-6 | Komm, Heilger Geist |
| Schluss: | 380, 1+5 | Großer Gott |